



## खामोशी : द साईलेन्ट लव-6

“रात को उसकी चुदाई मैंने कॉन्डोम लगाकर कर दी.  
जब सुबह उठा तो लगा कि वो अपनी खामोशी को  
तोड़कर कुछ कहेगी मगर उसने कुछ भी नहीं कहा.  
फिर जब अगली रात आई तो ... ..”

**Story By:** mahesh kumar (maheshkumar\_chutpharr)

**Posted:** Friday, April 19th, 2019

**Categories:** [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

**Online version:** [खामोशी : द साईलेन्ट लव-6](#)

## खामोशी : द साईलेन्ट लव-6

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मैं अपनी पड़ोसन की बेटी मोनी की चूत को चोदने के लिए तड़प रहा था. आखिरकार वह रात आ ही गयी और उस रात में मोनी की चूत की चुदाई करके कॉन्डोम को वीर्य से भर दिया था.

अब आगे :

मैंने अपने लंड पर कॉन्डोम पहना था इसलिये मैं एकदम से ही मोनी से अलग नहीं हुआ. मैंने पहले तो थोड़ा सा पीछे होकर मोनी की चूत से अपने लंड को बाहर निकाला फिर अपने लंड पर से उस कॉन्डोम को उतारा जो कि मेरे वीर्य के भरे होने के कारण नीचे लटक सा गया था।

सही में मेरे लंड से उस दिन कुछ ज्यादा ही वीर्य निकला था. मैं जानता था कि मेरे लंड से औसतन कितना रस निकलता है. मगर न जाने मोनी की चूत में वो क्या कशिश थी कि उस दिन मेरे लंड ने कुछ ज्यादा ही लावा उगल दिया.

मैं पूरी तरह से संतुष्ट हो गया था उसकी चूत में वीर्य निकालने के बाद. मन में एक उत्सुकता भी बनी हुई थी कॉन्डोम में भरे अपने रस को देखूं तो सही कि आज मेरे मूसल लंड ने कितना वीर्य निकाला है. मगर अन्धेरे के कारण मैं देख नहीं पा रहा था फिर भी उस कॉन्डोम के भार से महसूस हो रहा था कि मेरे लंड ने आज कुछ ज्यादा ही वीर्य उगला था।

उस कॉन्डोम को उतारकर मैंने उसमें ऊपर से गाँठ मारकर अब मोनी के बिस्तर के पास ही रख दिया और चुपचाप पलंग पर आकर लेट गया। वैसे तो मैं मोनी के पास नीचे भी सो सकता था और इसके लिये मेरे पास कॉन्डोम भी थे। मगर एक तो मैं पिछले दो तीन दिन के सफर से थका हुआ था और दूसरा एक दिन में ही ज्यादा कुछ करके मैं अपने बने बनाये

काम को बिगाड़ना नहीं चाहता था इसलिये मैं अब अपने बिस्तर पर ही आ गया।

मैं अपने बिस्तर पर आकर अभी लेटा ही था कि कुछ देर बाद ही नीचे से मुझे हल्की सी कपड़ों की सरसराहट सुनाई दी. मैंने करवट बदलकर नीचे की तरफ देखा तो मोनी पीठ के बल सीधी लेटकर अपनी सलवार का नाड़ा बाँध रही थी। सलवार का नाड़ा बाँधकर मोनी ने अब एक बार तो मेरी तरफ देखा फिर चुपचाप करवट बदलकर सो गयी। मैं भी पिछले दो दिनों से थका हुआ था इसलिये अब मैं भी चुपचाप सो गया।

अगले दिन सुबह मैं पहले की तरह ही देर से उठा और उठते ही सबसे पहले मैंने उस कॉन्डोम को देखा जो कि रात में इस्तेमाल के बाद मैंने मोनी के बिस्तर के पास ही छोड़ दिया था. मगर वो अब वहाँ पर नहीं था। मोनी ने घर की साफ सफाई कर ली थी और शायद उसे भी उठाकर फेंक दिया था।

मोनी ने उस कॉन्डोम को तो फेंक दिया था, मगर वो अभी मुझसे बात नहीं कर रही थी। मैं जब उठा उस समय उसने घर के सारे काम निपटा लिये थे और वो शायद खाना बनाने के लिये सब्जी आदि काट रही थी। मोनी ने लाल रँग की साड़ी पहनी हुई थी और उसके साथ उपर लाल रँग का ही ब्लाउज पहना था जिसमें वो बला की खूबसूरत लग रही थी। माथे पर लगा तिलक और रसोई में रखी पूजा की थाली से लग रहा था कि वो शायद अभी मन्दिर जाकर आई थी। मेरे उठते ही उसने अब एक बार तो मेरी तरफ देखा फिर चुपचाप अपने काम में ही लग गयी।

यूँ तो मैं उम्मीद कर रहा था कि मोनी कल रात की चुदाई के बाद अब मुझसे खुलना चाह रही होगी मगर ऐसा कुछ हुआ नहीं. कल रात से पहले तो मैं ही उसके पीछे पड़ा हुआ था मगर कल रात तो मोनी ने भी मेरे लंड से चुदाई का मजा लिया इसलिए आज मेरे मन में कुछ डर भी नहीं था. मैं उससे कुछ बातचीत होने की उम्मीद कर रहा था किंतु उसने आज भी कुछ नहीं कहा. मगर उसके चेहरे के भावों से इतना पता चल ही रहा था कि वह कल की

रात वाली हसीन चुदाई से मुझसे गुस्सा नहीं थी.

रोजाना की तरह ही जब तक मैं नहा कर बाहर आया तो मोनी अपनी पड़ोसन के घर जा चुकी थी. अब ऐसे ही दिन निकल गया और रात हो गयी। अब रात को खाना खाने के बाद पहले की तरह ही मैं टीवी चालू करके बैठा हुआ था और मोनी बर्तन आदि साफ कर रही थी। अभी तक मोनी ने ना तो मुझसे कुछ कहा था और ना ही कोई बात की थी. मगर रसोई के काम निपटाने बाद मोनी अब मेरे पास आकर खड़ी हो गयी.

मैं उससे इस तरह चुपचाप अपने पास आकर खड़ी होने की उम्मीद नहीं कर रहा था. मुझे लगने लगा था कि हम दोनों का रिश्ता अब खुलने लगा है मगर वह पहले की ही तरह अपने आप में ही सिमटी लग रही थी. जिससे मैं थोड़ा घबरा तो गया था मगर फिर भी मैं चुपचाप टीवी की तरफ ही देखता रहा।

मेरे पास आकर मोनी कुछ देर तो वैसे ही खड़ी रही फिर पता नहीं उसके दिल में क्या आया कि उसने लाईट के साथ साथ मुझसे कहे बिना ही टीवी को भी बन्द कर दिया और चुपचाप मेरे पास पलंग पर आकर लेट गयी।

मैं तो सोच रहा था कि मोनी आज भी अपना बिस्तर नीचे लगाकर सोयेगी और मुझे ही उसके पास जाकर पहल करनी होगी मगर मोनी तो अब खुद ही मेरे साथ पलंग पर आकर सो गयी थी! शायद मोनी भी समझ गयी थी कि मैं अब ऐसे मानने वाला तो हूँ नहीं इसलिये वो अब खुद ही मेरे पास आकर सो गयी थी।

मोनी के मेरे पास लेटते ही अब मैं भी तुरन्त ही मोनी की बगल में लेट गया। वो अपना मुँह दूसरी तरफ करके सो रही थी इसलिये धीरे से अपना एक हाथ उसकी कमर पर रखकर मैं उसके पीछे चिपक गया।

उसने वही दिन वाली ही साड़ी पहनी हुई थी इसलिये अब जैसे ही मेरा हाथ ब्लाउज व

साड़ी के बीच उसकी नंगी कमर से स्पर्श हुआ तो उसकी साँसें पहले से तेज चलने लगीं.  
मेरा हाथ जैसे-जैसे उसकी कमर को सहलाता गया उसकी सांसों की गति तेज होती गयी.

मोनी के पीछे चिपकर मैंने अब एक बार तो उसकी कमर को सहलाया फिर धीरे से अपना हाथ सीधा ही उसकी चूचियों की तरफ बढ़ा दिया.

मेरा विचार था कि आज मोनी किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं करेगी मगर उसने चूचियों पर मेरा हाथ पहुंचते ही फिर से उनको छिपाने की कोशिश की. मगर आज मेरी हिम्मत सातवें आसमान पर थी और मैंने उसके विरोध की परवाह न करते हुए उसके ब्लाउज में हाथ डाल कर उसकी चूची को अपने हाथ में भींच लिया.

नीचे से उसने ब्रा पहनी हुई थी जो मेरे हाथ में आकर भर गयी थी. अब मुझसे रुका नहीं जा रहा था इसलिए मैंने उसके ब्लाउज के हुकों को खोलना शुरू कर दिया और वह कसमसाने लगी. मैंने धीरे-धीरे एक-एक करके उसके ब्लाउज के सारे हुक खोल दिये और उसकी चूचियों को ब्लाउज से बाहर निकाल कर नंगी कर लिया.

बस अब क्या था, जैसे ही चूची मेरे हाथ में आकर नंगी हो गई तो मैंने उसकी चूचियों को बारी-बारी से मसलना और भींचना शुरू कर दिया. कभी मैं ऊपर वाली चूची को दबा देता तो कभी नीचे वाली को मसल देता.

उसकी नंगी चूचियों को आज मैं पहली बार अपने हाथ में इस तरह से भर कर उनका आनंद ले रहा था इसलिए मेरे मुंह में जैसे पानी सा आने लगा उनको पीने के लिए. कुछ देर तक मोनी की सन्तरे जैसी चूचियों को सहलाने के बाद मैंने मोनी को सीधा करके अपनी तरफ खींचने की कोशिश की ताकि मैं उसकी चूचियों का रसपान कर सकूँ.

एक बार हल्का सा विरोध जताने के बाद मोनी सीधी होकर लेट गयी. उसके सीधा होते ही मैंने उसकी एक चूची के निप्पल को मुंह में भर कर गप्प से अंदर ले लिया. मेरे मुंह में निप्पल जाते ही मोनी के हाथ-पैरों में एक झटका सा लगा. वह अपनी गहराती सांसों के

साथ कंधों को सिकोड़ कर छुईमुई की तरह बिल्कुल सिकुड़ती सी चली गई. मेरे ख्याल से वह अपनी चूचियों को छिपाने के लिए उठी थी मगर अब मैं उसके ऊपर आ चुका था इसलिए वह बस कंधे सिकोड़ कर रह गयी.

मोनी की चूची मुंह में भर कर मैंने उनको बेसब्री के साथ चूसना शुरू कर दिया. मोनी की उत्तेजना मुझसे भी ज्यादा तेज थी जो उससे बर्दाश्त नहीं हो रही थी इसलिये वह एक तरफ मुड़ कर मेरे चंगुल से छूटने का प्रयास करने लगी थी. मगर उसके दूध जो मेरे मुंह लग चुके थे उनको भला अब मैं कहाँ छोड़ने वाला था. मैं उसकी दोनों चूचियों को बदल-बदल कर पीने लगा. मेरे चूसने के कारण कुछ ही देर में मेरी बहन की चूचियां बिल्कुल सख्त हो गईं. उनके निप्पल सुपारी की तरह तन कर कड़े हो गये.

मुझे नहीं पता कि उसके पति ने उसकी चूचियों को कभी पीया भी था या नहीं मगर जिस तरह से मोनी व्यवहार कर रही थी उससे मुझे ऐसा लग रहा था कि कोई मर्द उसकी चूचियों को जैसे पहली बार पी रहा है.

उसकी चूचियों को पीते हुए मैं उसके होंठों को भी चूसना चाहता था मगर अगले ही पल मेरा ध्यान उसकी चूत की तरफ चला गया और मैंने एक हाथ नीचे ले जाकर उसकी चूत पर रख दिया. जैसे ही मेरा हाथ उसकी चूत पर जाकर टिका उसने अपनी जांघों को भींच लिया और घुटनों को मोड़ कर उन्हें दूसरी तरफ कर लिया.

उसकी साड़ी और पेटिकोट के निचले छोर को पकड़ कर मैंने धीरे-धीरे उसको ऊपर करना शुरू कर दिया. चूंकि उसने घुटने मोड़े हुए थे इसलिए मैं उसकी साड़ी को घुटनों तक ही ऊपर कर पाया मगर बाकी का आधा काम उसकी जांघों के खुद के भार ने कर दिया और उसकी नंगी जांघें मेरे हाथों में आकर भर गयीं. बड़ी ही चिकनी जांघें थी मोनी की.

हाथों में आने के बाद उसकी जांघें ऐसे लग रही थीं जैसे वह कोई रबड़ की गुड़िया की तरह

है बिल्कुल नर्म और मुलायम. मेरा हाथ उसकी चिकनी जांघों पर फिसलते हुए सीधा उसकी पेंटी तक पहुंच गया. मैंने उसके पेंटीकोट को पेट तक पलट कर उसकी पेंटी में अपने हाथ को घुसा दिया. मोनी प्रतिक्रिया में अपने दोनों घुटनों को मोड़ कर नीचे वो दूसरी तरफ मुड़ गई.

चूंकि उसने घुटनों को मोड़ लिया था इसलिये मेरा हाथ उसकी चूत के पहुंच से दूर था. मगर मैंने जोर लगाते हुए उसकी चूत के ऊपरी फूले हुए भाग को ही धीरे-धीरे सहलाना शुरू कर दिया. उसकी चूत बिल्कुल साफ तो नहीं लग रही थी मगर उस पर ज्यादा घने और बड़े बाल भी मुझे महसूस नहीं हो रहे थे.

मेरे हाथों पर उसकी चूत के स्पर्श से मुझे यह ज्ञात हो रहा था कि उसने शायद कुछ ही दिन पहले अपनी चूत के बालों को साफ किया था. मोनी की चूत ज्यादा फूली भी नहीं थी मगर इतना उभार तो बना रही थी कि मेरे हाथों को उसके स्पर्श का अहसास हो सके. उसका उभार शायद उसके घुटने मोड़ने के कारण बना हुआ था. जहाँ तक मेरा अंदाजा कह रहा था उसकी चूत सपाट ही थी क्योंकि मोनी का शरीर ज्यादा भरा हुआ नहीं था तो फिर उसकी चूत भला इतनी कैसे फूली हो सकती थी.

मैंने कुछ देर तो उसकी चूत को ऊपर से ही सहलाया और फिर उसकी जांघों के बीच उसकी चूत और जांघों का जो त्रिकोण सा बना था वहाँ से धीरे धीरे मैंने अपनी उंगलियों को अन्दर घुसाना शुरू कर दिया। मोनी ने अपनी जाँघों को जोरों से भींचा हुआ था. फिर भी मैंने थोड़ी सी जबरदस्ती करके अपनी उंगलियों को उसकी जाँघों के बीच घुसा ही दिया, जहाँ पर मुझे अब हल्के हल्के गीलेपन और गर्मी का सा अहसास हुआ !

शायद इतनी देर से हो रही छेड़-छाड़ की वजह से मोनी की चूत ने भी कामरस निकालना शुरू कर दिया था जिससे उसकी चूत के साथ साथ उसकी पेंटी और जाँघें भी अन्दर से गीली हो रखी थी। मैंने पहले तो बस अपनी उंगलियों को ही उसकी जाँघों के बीच घुसाया

था, मगर मोनी की पेंटी में मुझे अब गीलापन महसूस हुआ तो मैंने धीरे-धीरे करके अपनी आधी हथेली को उसकी जाँघों के बीच घुसा दिया और सीधा उसकी चूत की फाँकों को पकड़ लिया जिससे मोनी अब जोरों से कसमसा उठी।

इतना रास्ता तय करने के बाद अब मैं कहाँ रुकने वाला था. अब तो सेंध लग चुकी थी. अपनी उंगलियों को उसकी चूत की फाँकों तक पहुँचाकर मैंने अब अन्दर ही अन्दर धीरे धीरे मोनी की चूत की फाँकों को मसलना शुरू कर दिया जिससे मोनी अपनी जाँघों को भींचकर नीचे से और भी ज्यादा दूसरी तरफ मुड़ गयी। उसकी ये तड़प और खामोशी मुझे अंदर से और भी ज्यादा बेचैन कर रही थी. मैं बस खुद को किसी तरह रोके हुए था नहीं तो मेरे मन में उसके चिकने बदन के प्रति इतना आवेग उठा हुआ था कि मैं उसको जानवरों की तरह पकड़ कर चोद दूँ. मगर पता नहीं कुछ सोच कर रह जाता था.

मोनी अब भी मेरे साथ खुल नहीं रही थी. मैं उसकी इस खामोशी को समझ नहीं पा रहा था. जब सब कुछ हमारे बीच में होने लगा था तो फिर अपने मन के भावों को छिपाने की कोशिश करने में क्यों लगी हुई थी यह बात मेरी समझ से बाहर थी. मैं उसकी चूत का रस पीने के लिए लालयित था मगर वो तो शायद करवट बदलकर अपना मुँह ही दूसरी तरफ ही कर लेती. लेकिन उसकी चूचियों को पीने के लिये मैंने अपने शरीर के भार से उसे दबाया हुआ था।

मेरी खामोश सेक्सी कहानी में मेरी बहन के साथ शुरू हो चुकी चुदाई की कहानी अगले भाग में जारी रहेगी. कहानी पर अपने विचार रखने के लिए कमेंट करें और मेल करके बतायें कि कहानी में आपको कितना मजा आ रहा है.

chutpharr@gmail.com



## Other stories you may be interested in

### खामोशी : द साईलेन्ट लव-3

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि रात को सोते समय मेरी वासना ने मुझे मोनी के बदन को छूने के लिये मजबूर कर दिया. मैंने उसके बदन का स्पर्श पाने के लिए नींद में होने का नाटक किया [...]

[Full Story >>>](#)

### मार्च 2019 की बेस्ट लोकप्रिय कहानियाँ

प्रिय अन्तर्वासना पाठको मार्च 2019 प्रकाशित हिंदी सेक्स स्टोरीज में से पाठकों की पसंद की पांच बेस्ट सेक्स कहानियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं... जवान लड़की के पहले चुम्बन का अहसास मेरी बारहवीं के एग्जाम खत्म हो गए थे, मम्मी और [...]

[Full Story >>>](#)

### कमसिन स्कूल गर्ल की व्याकुल चूत-1

मेरे प्यारे अन्तर्वासना के पाठको, आज कई महीनों बाद आप सब को संबोधित कर रहा हूँ. मेरी पिछली कहानी कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत जो लगभग 6 महीने पहले प्रकाशित हुई थी, उसके बाद से कुछ नया लिखने का संयोग [...]

[Full Story >>>](#)

### भाई को नंगा बदन दिखा कर चुदाई के लिए पटाया

दोस्तो, मेरा नाम अमीषा है. मैं अन्तर्वासना की एक नियमित पाठिका हूँ, मुझे यहां लिखी हुई सारी सेक्स स्टोरी बहुत पसंद हैं. अब मैं आपको अपने बारे में बता दूँ. मैं एक बहुत ही सेक्सी लड़की हूँ. मुझे लंड से [...]

[Full Story >>>](#)

### खामोशी : द साईलेन्ट लव-2

अभी तक की कहानी में आपने पढ़ा कि अपनी चाची की बेटी मोनी के साथ मैं उसके ससुराल में उसके पति के घर आ गया था. मुझे मोनी को छोड़कर वापस जाना था मगर रिजर्वेशन पंद्रह दिन बाद का मिला. [...]

[Full Story >>>](#)

